शुक्रवार,
६ मार्च, १९५३

सत्यमेव जयते

संसदीय वाद विवाद

1st

लोक सभा

तीसरा सत्र

शासकीय वृत्तान्त

(हिन्दी संस्करण)

Preservation Unit
18·3·92
Fumigated
Parliament Library

भाग २—प्रश्न और उत्तर से पृथक् कार्यवाही

लोक सभा

शुक्रवार, ६ मार्च, १९५३

सदन की बैठक दो बजे समवेत हुई

[उपाध्यक्ष महोदय अध्यक्ष-पद पर आसीन थे]

प्रश्न और उत्तर

(प्रश्न नहीं पूछ गये : भाग १ प्रकाशित नहीं हुआ)

मार्शल स्टालिन की मृत्यु

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : श्रीमान्, सदन की कार्यवाही प्रारम्भ किये जाने से पूर्व मैं आप के अनुग्रह से एक ऐसी घटना का निर्देश करना चहता हूं जिसका कदाचित सदन को ज्ञान है। आज प्रातःकाल से पहले मार्शल स्टालिन की मृत्यु हो गई। केवल दो दिन पूर्व ही, हमने उनके गम्भीर रूप से बीमार होने का समाचार सुना था; एक पखवाड़े या तीन सप्ताह पूर्व, मास्को स्थित हमारे राजदूत ने उनसे भेंट की थी। मार्शल स्टालिन का ध्यान आते ही हमारी आंखों के सामने गत ३५ वर्षों में हुई घटनायें आ जाती हैं। हम सभी इसी युग की सन्तानें हैं और समय ने हमको अधिक प्रभावित किया है। हम न केवल अपने देश में होने वाले संघर्षों में ही पले

हैं अपितु संसार के अन्य भागों में होने वाले अन्य महान संघर्षों में भी हमने भाग लिया है और उन से प्रभावित भी हुए हैं। अतः इन विगत ३५ वर्षों का सिंहावलोकन करते समय हमारी दृष्टि के सामने बहुत सी आकृतियां आती हैं परन्तु किसी न भी आज के इतिहास को इतना प्रभावित नहीं किया है जितना कि मार्शल स्टालिन ने। वह धीरे धीरे एक औपन्यासिक चरित्र बनते गये, कभी उनका व्यक्तित्व रहस्यमय हो जाता था और अन्य अवसरों पर वह ऐसे व्यक्ति बन जाते थे जिसके स्नेह बन्धन केवल कुछ ही व्यक्तियों के साथ नहीं थे अपितु अनगिनत व्यक्तियों के साथ थे। युद्ध और शान्ति दोनों अवसरों पर उन्होंने अपनी महानता सिद्ध की। उन्होंने ऐसी दृढ़ इच्छा, शक्ति और साहस का प्रदर्शन किया जो हम संसार में बहुत बिरलों में ही पायी जाती है और जब इस युग का इतिहास लिखा जायेगा तो उनके लिए बहुत कुछ कहा जायेगा। यह तो मैं कह नहीं सकता कि भावी पीढ़ियों का उनके प्रति क्या दृष्टिकोण रहेगा, उनके सम्बन्ध में उनकी क्या सम्मति होगी, परन्तु इस एक बात पर सभी सहमत होंगे कि वह इतन प्रभावशाली व्यक्ति थे जिन्होंने अपने युग में राज्यों के भागों को पलट दिया था, वह ऐसे व्यक्ति थे, यद्यपि उनको सबसे महान सफलता युद्धक्षेत्र में मिली, परन्तु संसार इस बात को याद रखेगा कि उन्होंने अपने महान देश को किस प्रकार उच्चता के शिखर तक पहुंचाया।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

यह एक बहुत महान कार्य था। उनका यह कार्य एक ऐसा कार्य था जिसको बहुत कम व्यक्ति कर सकते थे, साथ ही वह न केवल प्रसिद्ध थे परन्तु जैसा मैंने निवेदन किया वह सोवियत रूस की असंख्य जन संख्या के प्रेमी थे, और उस देश के अतिरिक्त अन्य देशों वालों ने भी उनको ऐसा ही समझा था। मैं उन व्यक्तियों को जानता हूं जो मार्शल स्टालिन के कार्य बन्धु थे, और जो बाद में उनसे असहमत हो गये थे, अथवा पहले मार्शल स्टालिन के कार्य में हाथ बटाते रहे थे और बाद को उन से असहमत हो गये थे, उन्होंने मुझे बताया कि यद्यपि वह उनसे असहमत थे परन्तु वह इसे एक व्यक्तिगत मतभेद समझते थे, क्योंकि उनके साथ एक व्यक्तिगत नाता स्थापित हो गया था। यह वह व्यक्तित्व था जिसने अपने जीवन काल में असंख्य जनसंख्या से प्रेम तथा सम्मान के नाते स्थापित किये थे, और जिन्होंने इतिहास के इस अशान्त काल में अपना दृढ़ व्यक्तित्व कायम रखा। चाहे उन्होंने किन्हीं व्यक्तियों के भावानुसार गलतियां की हों सफलता प्राप्त की हो, यह नगण्य है। परन्तु उनकी महान सफलता का लोहा सबको मानना पड़ेगा। अतः इस अवसर पर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना हमारे लिए उपयुक्त ही है क्योंकि यह अवसर केवल मात्र किसी महान व्यक्ति के निधन का ही नहीं है, परन्तु एक प्रकार से एक युग का ही अन्त है। इतिहास एक निरन्तर प्रवाह है और उसे इस प्रकार के भागों में बांटना जैसा कि इतिहासकार तथा अन्य व्यक्ति करते हैं, सरासर मूर्खता है; क्योंकि इतिहास तो निरन्तर प्रगतिशील है परन्तु तो भी ऐसे समय आते हैं जो किसी अवसर विशेष पर समाप्त होते और नया जीवन धारण करते मालूम नहीं होते हैं और यह निश्चय है कि जब कभी किसी ऐसे महान व्यक्ति का निधन हो जाता है जिसने अपने युग को बदलने में प्रमुख भाग लिया होता है, तो एक प्रकार से उस काल या युग विशेष का अन्त सा हो जाता है। यह तो मैं जानता नहीं कि भविष्य इस सम्बन्ध में क्या कहेगा, पर तो भी यद्यपि मार्शल स्टालिन की मृत्यु हो गई है, और क्योंकि उनकी जनता के हृदयों तथा विचारों पर इतनी गहरी छाप थी, इसलिये उनकी स्मृति तथा प्रभाव मात्र ही जनता के मनों को प्रभावित करता और उन में नवजीवन का संचार करता रहेगा। अनेकों व्यक्तियों ने उनके सम्बन्ध में कहा है, इन में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो कि इस संसार के रंगमंच पर हो रहे नाटक में उनके विपक्षी और प्रतिद्वन्दी थे, परन्तु यह कथन एक दूसरे से भिन्न है और कभी कभी तो परस्पर विरोधी है। किन्हीं ने उनको उदारचेता और दयालु बताया है, अन्य ने उनको निर्मम, कठोर और हृदयहीन बताया है, और यह संभव है कि यह सभी गुण उनमें हों। कुछ भी हो एक महान व्यक्ति का निधन हो गया है। वह जहां तक मुझे विश्वास है, सोवियत राज्य के प्रविधिक अर्थों में उपक्रम नहीं थे--हम सामान्यतः महान व्यक्तियों और विशेषतः राज्यों के अध्यक्षों के निधन पर इस सदन में निर्देश करते हैं--परन्तु मार्शल स्टालिन राज्य के एक सामान्य अध्यक्ष से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे वह एक महान व्यक्ति थे, चाहे वह किसी राज्य के अध्यक्ष थे अथवा नहीं। मेरा विश्वास है कि उनके प्रयत्न साधारणतया शान्ति बनाए रखने के सम्बन्ध में होते थे। युद्ध छिड़ने पर उन्होंने अपने आप को एक उत्तम योद्धा सिद्ध किया, परन्तु जो भी सूचना तथा समाचार हमें मिले थे उनसे हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि वह अपने

प्रभुता तथा प्रभाव से शान्ति स्थापित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। आज के अशान्त तथा संघर्षमय काल में भी, उनके निधन का मैं आशा करता हूं, यह अर्थ नहीं लगाया जायेगा कि उनका वह प्रभाव जिसे वह शान्ति स्थापन के सम्बन्ध में काम में लाया करते थे अब कालातीत हो गया है। इसके विपरीत मुझे आशा है कि इस घटना से समस्त देशों में पाए जाने वाले खिचाव और तनाव से हमारे मष्तिकों को कुछ शान्ति मिलेगी, और हम संसार की वर्तमान समस्याओं को उस संकुचित तथा कठोर मनोवृत्ति से, जोकि लोगों के आपस में निरन्तर संघर्ष तथा तर्क करने के कारण उत्पन्न हो जाती है, नहीं देखेंगे अपितु अधिक सद्भावना तथा सहयोग की भावना से देखेंगे जिससे कि उनकी मृत्यु से हमारा ध्यान इस संघर्ष लिप्त संसार की ओर अधिक जाये और हम पहले से भी अधिक प्रयत्न इस संसार में शान्ति स्थापित करने तथा और अग्रेतर संकटों तथा दुर्घटनाओं को होने से रोकने के सम्बन्ध में कर सकें।

वास्तव में जब हमारे राजदूत ने कोई तीन सप्ताह पूर्व मार्शल-स्टालिन से भेंट की थी तो उन्होंने अपने आपको शान्ति का पृष्ठपोषक बताया था और यह इच्छा प्रकट की थी कि विश्व शान्ति को बनाये रखा जाय उसे खंडित न होने दिया जाये। उसी समय उन्होंने भारत के प्रति अपनी सद्-भावना प्रकट की थी और हमारे देश और हममें से कुछ के प्रति अपनी सद्इच्छायें भेजी थी। जिस रुचि और लगन से उन्होंने हमारे राजदूत से हमारी सांस्कृतिक समस्याओं पर चर्चा की थी और जो ज्ञान उन्होंने उसके सम्बन्ध में प्रदर्शित किया था, वह निसंदेह एक आश्चर्यजनक बात थी। सदन को यह जान कर आश्चर्य होगा कि उन्होंने भारत की भाषाओं, उनके पारस्परिक सम्बन्धों, उनकी उत्पत्तियों और उनके विस्तार, के सम्बन्ध में बातें की थीं और हमारे राजदूत ने यथासंभव उनकी उत्तर देने का प्रयत्न किया था।

अतः मैं आशा करता हूं श्रीमान्, कि इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते समय हमें यह आशा भी प्रकट करनी चाहिए कि इस दुःखद घटना से आज का क्षुब्ध संसार शान्ति स्थापन के लिये और अधिक प्रयत्नशील होगा। मैं आपको यह सुझाव देना चाहूंगा श्रीमान् कि हमारी यह श्रद्धांजलि और सम्वेदना का संदेश इस सदन की ओर से आपके द्वारा सोवियत संघ की सरकार को पहुंचा दिया जाये। इसके साथ ही मैं यह भी सुझाव देना चाहता हूं श्रीमान्, कि मार्शल स्टालिन की स्मृति में आज सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाये।

उपाध्यक्ष महोदय : मेरा विचार है कि माननीय सदन नेता ने मार्शल स्टालिन के निधन के सम्बन्ध में जो भाव प्रकट किये हैं यह सदन उनका पूर्ण रूप से समर्थन करता है। इस सदन की ओर से मैं इस सदन में प्रकट किए गए शोकोद्गारों तथा इस सदन द्वारा पारित किए गये सम्वेदना के संदेश को सोवियत राज्य संघ की सरकार को प्रेषित कर दूंगा।

मैं माननीय सदस्यों से अपने स्थानों पर दो मिनट के लिए खड़े होने की प्रार्थना करता हूं।

मार्शल स्टालिन की स्मृति में मैं आज सदन को स्थगित करता हूं। सदन सोमवार ९ मार्च, १९५३ को दो बजे फिर समवेत होगा।

इसके पश्चात् सदन की बैठक सोमवार ९ मार्च, १९५३ के दो बजे तक के लिए स्थगित हो गई।